सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 25 दिसम्बर 2015, दुर्गापुर (धाम)

! राधा–स्वामी !

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

इस संसार में कोई दुर्लभ रत्न है, वो है सतगुरू। इस संसार में सतगुरू हर किसी को नही मिलता है, और जिसको मिल जाए, समझो वो बहुत भाग्यशाली है।

हमने इस संसार में जितना धन कमाया, हमने उसमें से जितना धन Use कर लिया, वो हमारा है, और जितना धन हमारे मरने के बाद बैंक में रह गया, समझो वो धन फालतू में कमाया। आप सोचते हैं कि मैं बेटों के लिए धन छोड जाऊँगा, तो एक कहावत है–पूत कपूत को क्या धन संचय। अगर बेटा अच्छा है तो आपको उसके लिए धन छोडने की कोई जरूरत नही है, वो खुद कमा लेगा। अगर बेटा नालायक निकला, तो आप उसके लिए कितना भी धन छोडो, वो बरबाद कर देगा।

एक भूखा आदमी था। उससे पूछा दो और दो कितने होते हैं, उसने कहा–चार रोटियाँ। हमारे राजेश जी को भी किसी ने पूछा दो और दो कितना होता है? तो इन्होने कहा–चार गुरू। क्योंकि इनको उठते–बैठते, सोते–जागते, चलते, हर समय गुरू ही गुरू नजर आता है, तो ये क्या जबाब देंगे? जब इनसे पूछा दो और दो कितना होता है? ये कहते हैं–चार गुरू। ये है इनकी अवस्था, और एक दिन यही अवस्था आप सबको आ जाएगी। जितने भी यहाँ बैठे हैं, ये अवस्था तुम सबको आ जाएगी। तुम सबकों हर जगह गुरू ही गुरू दिखाई देगा। हर चीज में गुरू दिखाई देगा। ये पेड क्या है? गुरू है, सब गुरू ही गुरू है, और वो दिन दूर नही है, क्यों? क्योंकि आप गुरू से प्रेम करते हो, और यही प्रेम आपको उसी अवस्था पर ले जाएगा, जिस अवस्था पर आज मेरा राजेश है।

आज क्रिसमस का दिन है। इस दिन जीसस क्राईस्ट पैदा हुए थे। जीसस क्राईस्ट एक बहुत बडे संत थे। बाईबल मैंने पढी है, आज की जो बाईबल है, वो Original नही है, जो पहले थी। क्यों उस जमाने में कोई लिखता नही था, मुहं जबानी पाशंग होता था। अब आप एक कहानी को दूसरे को सुनाते हैं, और वही कहानी दूसरा किसी तीसरे को सुनाते है, तो जैसा उन्होने पूरा बताया था, वैसा नही बता सकते आप। इसी तरह बाईबल आगे चलती गई। आज जो बाईबल है, वो Original बाईबल नही है, जो जीसस क्राईस्ट ने कही थी अपने मुख से। उसके कुछ अंश हैं, बाकी सब मिलाया गया है। जैसे जीसस क्राईस्ट ने कहा था–The soul not kill, यानि कि तुम कोई हत्या नही करोगे। लेकिन जैसे हमारे पंण्डित मौलवी हैं, देखते हैं कि हमारी रोजी–रोटी खतरे में है, तो उसको Twist करते हैं। तो उन्होने Kill के बदले उसको Murdered कर दिया। The Soul not Murdered, यानि कि तुम मनुष्य को नही मारोगे, तो इसी तरह से बहुत सारी चीजें Change हो गई हैं।

लेकिन एक बात नोट करने वाली है कि जीसस क्राईस्ट की मौत कैसे हुई? उसको सूली पर चढा कर उसके पूरे शरीर में कीलें ठोकी गईं। जब वो कील ठोक रहे थे उसको, उसके मुँह से एक ही बात निकल थी, Oh! God Forgive them becouse they did not know what they do, उस टाईम प्रार्थना कर रहा था उनके लिए। हे भगवान इनको माफ कर देना, इनको पता नही हम क्या कर रहे हैं। आप देखो आज सारे विश्व में तीन चोथाई हिस्सा क्रिस्चयन हैं, और वो जीसस को मानते हैं। जीसस को आज हो गए 2000 साल, और 2000 साल से वो जिंदा है और पता नही कितने साल और जिंदा रहेगा, क्यों? हम कहते हैं कि जीसस को सूली पर चढाया गया। नही, किसी ने सूली पर नही चढाया उसको, उसने खुद अपने आपको सूली पर चढवाया। क्योंकि उसने ऐसी मौत चुनी कि लोग उसे हजारों साल तक याद करते रहें। वो God था, उसने बहुत करामात किये।

अब हम जो यहाँ इकट्ठे हुए हैं, यहाँ हम क्रिसमस डे मनाने के लिए इकट्ठे नही हुए हैं। हम यहाँ गुरू जी के दर्शन करने के लिए इकट्ठे हुए हैं, क्योंकि 18 नवम्बर और 23 फरवरी के बीच में बहुत Gap हो जाता था। इसलिए हमने बीच में 25 दिसम्बर को एक सत्संग रख लिया, ताकि आपको गुरू जी के दर्शन हो जाएँ। अब गुरू जी के दर्शन क्यों हो जाएँ? क्योंकि

गुरू के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नही।
जग की कोई वस्तु भी, मन को मेरे भाती नही।।

कभी गुरू के लिए दो आँसू बहाए हैं आपने, बहाकर देखो कितना आनंद आता है, मैंने बहाए हैं। और जब हम गुरू के लिए आँसु बहाते हैं, तो गुरू एक–2 बूँद का हिसाब देता है। संसार के लिए आँसु बहाओ, वो सीधा गटर में, कोई Value नही है उनकी। क्यों? क्योंकि

संसार सारा झूठ है। अब झूठ के लिए तुम कितने भी आँसु बहाओ, वो तो झूठ में ही चलें जाएंगे। सच क्या है? सच एक सतगुरू है, सतगुरू के लिए आप कितने भी आँसु बहाओ, एक–2 बूँद का हिसाब देगा। लेकिन सतगुरू के लिए कोई आँसु नही बहाता, और अपने रिश्तेदारों के लिए, बेटा–बेटी के लिए, माँ–बाप के लिए खूब आँसु बहाते हैं। ऐसा क्यों होता है? सतगुरू के लिए आँसु क्यों नही बहाता कोई? क्योंकि ये काल का देश है, काल नही चाहता कि हम दयाल के पास चलें जाएँ, दयाल के लिए आँसु बहाएँ। काल कहता है मेरें लिए आँसु बहाओ, इसलिए काल हमको फँसाये रखता है। क्यों? क्योंकि काल का भोजन हम हैं। कबीर साहब कहते है–

दौलत दुनिया माल खजानें, बंधियाँ बैल चरायी।
जब हि काल का डण्डा बाजे, खोज खबर ना पायी।
सत्संग लागी रहो मेरे भाई, तेरी बिगडी बात बन जायी।।

बंधियाँ बैल का मतलब होता है कोल्हू का बैल। कोल्हू के बैल को सुबह आंखों में पट्टी बांधकर कोल्हू में लगाते हैं, और वो सारा दिन चलता रहता है, और जब शाम को उसकी पट्टी खोलते हैं तो वो देखता है मैं सारे दिन चलता रहा लेकिन मैं अभी भी वहीं हूँ। ये क्या चक्कर है? यही चक्कर हमारा भी है। हम भी उसी कोल्हू के बैल की तरहा हैं। हम भी हजारों बार मरे हैं, हजारों बार जीये हैं, और इस जन्म मरण की चक्की में करोडो बार पिसते रहे हैं, फिर भी हम वहीं हैं। फिर वही संसार, फिर वही नौकरी, वही बीमारि, वही रोग, वही बेरोजगारी, क्या पाया हमने? इतनी बार हम जीये, इतनी बार हम मरे, हम कोल्हू के बैल की तरह क्यों हैं? कबीर साहब कहते हैं–

दौलत दुनिया माल खजाने, बंधिया बैल चरायी।

दुनिया की दौलत, माल खजाने हमारी हथकडियाँ हैं। ये सब हमें संसार के साथ बांधकर रखती हैं। ऐसा नही है कि धन नही चाहिए, धन चाहिए हमको, धन कमाओ, ईमानदारी से कमाओ, ईमानदारी से खर्च करो, बच्चों के ऊपर खर्च करो, अच्छी शिक्षा दो, उनका कैरियर बनाओ। उनके घर बसाओ, लेकिन धन के साथ जुडो मत। जब हम धन के साथ जुड जाते हैं, तो हम भी कोल्हू के बैल की तरह जुडे रहते हैं, संसार के साथ। इसलिए कबीर साहब कहते हैं–

दौलत दुनिया माल खजाने, बंधिया बैल चरायी।
जबहि काल का डण्डा बाजे, खोज खबर ना पायी।।

उसकी लाठी में आवाज नही है, कौन किस टाईम टपक जाएगा कोई पता नही है। जहाँ हम रहते हैं वहाँ एक जैन साहब रहते हैं। वो 86 साल के हैं, जब भी वो हमारे पास आते थे, तो हमसे कहते थे, मुझे 100 साल जीना है। परसों हम बैठे थे, वो मेरी बगल में बैठा था। जब हम उठे तो वो उठा ही नही, हमने कहा भाई क्या हो गया? मैं उसको अपने कंधे के सहारे उसके घर ले गया, तो उसकी बीबी ने डॉक्टर को बुलाया। डैटर ने चैक किया और बोला इनको Mind Attack हो गया है। मैं यह कह रहा था कि

जबहि काल का डण्डा बाजे, खोज खबर ना पायी।

उसका डण्डा कब पडेगा, कोई पता नही चलता। इसलिए कबीर साहब कहते हैं–

सत्संग लागी रहो मेरे भाई, तेरी बिगडी बात बन जायी।

सत्संग में आया करो, सत्संग सुना करो। क्यों? क्योंकि तुम्हरी बिगडी बात बन जाएगी। हमारी बिगडी बात क्या है? हमारी बिगडी बात यह है कि हम अपने घर से बेघर हो गए हैं। ये संसार हमारा घर नही है, एक समय था जब हम मालिक के पास थे, मालिक के अंदर थे। जगदम्बा के गर्भ में हम सब जुड्वे भाई थे। लेकिन जब हम इस संसार में आ गए ओर यहाँ आकर भाई–भाई भी अलग हो गए। तो अब हमारा असली घर छूट गया है। तो अब हम अपने घर वापिस कैसे जाएँ? एक दिन अपने घर वापिस जरूर जाना है। लेकिन जाएँ कैसे? जब एक बच्चा पैदा होता है, तो हम उस बच्चे को कहते हैं कि ये भगवान का रूप है। क्यों? जब बच्चा गर्भ में होता है तो वो मालिक के साथ खेलता रहता है, और मालिक का ही रूप होता है। मालिक का रूप क्या है? बच्चे को मालिक का रूप क्यों कहते हैं? उसके लिए पहले आपको मालिक का रूप समझना चाहिए, मालिक का रूप क्या है? मालिक का रूप है परमशांती, परमसुख, ना काम ना क्रोध ना लोभ ना मोह, ना राग ना द्वेष ना अहंकार ना ईर्ष्या, कुछ नही, जब आपका Soul Pure है, आपको इन चीजों मे से कुछ भी नही है, तो आप भगवान का रूप हो। जब बच्चा पैदा होता है, तो उसमें भी कुछ नही होता है, और इसलिए उसको भगवान का रूप कहते हैं। वो भगवान का रूप माँ के गर्भ में होता है और भगवान के साथ खेलता रहता है। जब उसका संसार में आने का समय आता है, तो वो रोने लगता है। तो भगवान उसको कहता है तू रो मत, तू एक दिन वापिस मेरे पास आएगा। मैं वादा करता हूँ तेरे से कि एक दिन फिर तू मेरे पास वापिस आएगा। लेकिन कैसे? उसने एक शर्त रखी है, कहता है– जिस Condition में मैंने तुमको संसार भेजा है, अगर तुम उसी Condition में आओगे, तो मैं तुमको वापिस ले लूँगा। तो किस Condition में भेजा है उसने हमें संसार में? जब एक बच्चा पैदा होता है, तब उसमें संसार की कोई मैल नही होता है। संसार का मैल क्या है? संसार का मैल है काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ये सब संसार का मैल है और जब बच्चा पैदा होंता है,

तो उसमें भी संसार की कोई मैल नही होती है, और उस टाईम भगवान उससे वादा करता है, जिस हाल में मैंने तुमको संसार में भेजा है, उसी रूप में, मैं तुमको वापिस ले लूँगा। अगर तुमको संसार की जरा सी भी मैल लगी हो, मैं तुमको वापिस नही लूँगा। तो ये है हमारे घर जाने की सबसे बडी शर्त, कि हमको अपने घर अपने मालिक के पास जाना है, किस हाल में? उसी हाल में जिस हाल में हम आए। जब हम इस संसार में आए तो हमारे साथ संसार की कोई मैल नही थी। ना काम ना क्रोध ना नफरत ना द्वेष ना ईर्ष्या, और जब हम ये चीजें खत्म करेंगे अपने अंदर, तो हम वापिस अपने घर को जाएंगे। मालिक हाथ फैलाकर हमारा स्वागत करने को तैयार है, आ जाओ मेरे पास, तुम इस संसार के जन्म मरण के चक्कर से तंग आ गए हो। छोड दो इस संसार को और आ जाओ मेरे पास। लेकिन किस हाल में? तुमको संसार की कोई मैल नही लगी होनी चाहिए। अब जब बच्चा पैदा हो जाता है, तो भगवान का रूप होता है, लेकिन ज्यों–ज्यों ये संसार में बडा हो जाता है, तो ये संसार उसको लपेटे में ले जाता है। संसार की सारी मैल, सारी कीचड को अपने अंदर लपेट लेता है। सारी चीजें काम क्रोध लोभ मोह अहंकार आ जाते हैं इसके अंदर, और ये मालिक से दूर हो जाता है। अब मालिक ने तो वादा किया था कि एक दिन मैं तुमको वापिस ले आऊंगा अपने पास। कैसे जाएगा वो मालिक के पास? वो तो संसार की कीचड में फँसा हुआ है। अब उसका गुरू की याद आती है, और जब उसको मालिक की याद आती है तो उसको गुरू मिल जाता है। आपको गुरू ढूँढने की जरूरत नही है, आप सबका अपना गुरू निश्चित है। अपने अंदर तडप पैदा करो मालिक से मिलने की, मालिक कौन है? कहाँ रहता है? मैं उसे देखना चाहता हूँ। ये तडप पैदा करो, और गुरू आपके सामने। गुरू आएगा तुम्हारे पास और तुम्हारा हाथ पकडकर तुमको अपने साथ ले जाएगा। लेकिन अपने साथ ले जाने से पहले तुमको नहलाएगा। कबीर साहब कहते हैं–

सत्संग सिला पर ज्ञान का साबुन, मल–मल मन का मैल धोये।

गुरू क्या करता है? गुरू सत्संग से आपके मन की मैल धोता है, और एक दिन आप Pure Soul हो जाते हो। फिर मालिक कहता है–आओ मेरे पास, अब तुम शुद्ध और साफ हो गए। यही कबीर साहब कहते हैं–

सत्संग लागी रहो मेरे भाई, तेरी बिगडी बात बन जायी।

ये सब कहाँ मिलता है हमको? इसकी सिर्फ एक ही दुकान है।

चल सत्गुरू की हाट, ज्ञान बुद्धि लाईये।

सतगुरू की दुकान चलो, वहाँ हमको ज्ञान मिलेगा। कौनसा ज्ञान? अपने निज धाम वापिस जाने का ज्ञान, अपने मालिक के पास जाने का ज्ञान, और ये ज्ञान आपको सतगुरू की दुकान पर मिलेगा। इसलिए कबीर साहब कहते हैं– सत्संग में आया करो, सत्संग से आपको ज्ञान मिलेगा और आपकी बिगडी बात बन जाएगी। बिगडी बात क्या है हमारी? हम अपने घर से बेघर हो गए हैं और हम अपने घर वापिस जाएंगें।

!! राधा स्वामी !!